जय सियाराम

अवन्ति(उज्जैन) राज्य के पोवार(पंवार) समाज का परिचय और उनके मध्यभारत में आगमन तथा उनके संगठनों का इतिहास

प्राचीन काल में अवन्ति राज्य एक बहुत ही शक्तिशाली महाजनपद था जिसकी राजधानी उज्जैन थी। राजा गंधर्वसेन के पुत्र राजा भरथरी और उनके बाद उनके भाई सम्राट विक्रम विक्रमादित्य ने अवन्ति राज्य का शासन संभालकर भारतवर्ष के बहुत बड़े भूभाग पर शासन कर सनातन धर्म और संस्कृति का परचम सम्पूर्ण विश्व में फैला दिया था। महाकाल की नगरी उज्जैन सनातनी संस्कृति का मुख्य केंद्र थी और हजारों वर्षों तक अनेक कुलों के राजाओं ने यहां से प्रजाभिमुख श्रेष्ठ शासन दिया। इन क्षत्रिय राजाओं को राजपुत्र और बाद में राजपूत कहा जाने लगा। दसवीं सदी तक क्षत्रियों को "छत्तीस कुल" के होने का लिखा जाने लगा था। बाद में इन क्षत्रियों की अनेक शाखाएं हो गई और अवंति राज्य बाद में मालवा, राजपुताना आदि क्षेत्रों में बट गया था।

उज्जैन पर बाद में प्रमार कुल का मुख्य रूप से शासन रहा जिसमें राजा उपेंद्र, राजा सियाक, राजा मुंज, राजा भोज, राजा उदियादित्य आदि प्रमुख रूप से ऐतिहासिक दस्तावेजो में दर्ज हैं और पुष्टि भी करते हैं। राजा भोज के समय उज्जैन की जगह धार मालवा की राजधानी बन गई थी। प्रमार कुल और उनके नातेदार कुलों के द्वारा ही मालवा पर राजकीय और सैन्य कार्य किया जाता था, जो कालांतर में एक जातीय समूह के रूप में विकसित हुआ। जिनका चन्दरदाई कृत पृथ्वीराज रासो में छत्तीस कुल क्षत्रिय समूह के रूप में भी उल्लेख है और प्रमार उसमें से एक कुल है। मालवा में यही छत्तीस क्षत्रियों का समूह पोवार या पंवार जाति के रूप में विकसित हुआ। ये सभी प्राचीन राजपुत्रों का संघ आज की राजपूत जाति का भी हिस्सा बने जिसमें इन प्राचीन छत्तीस कुलों के साथ उनसे विभाजित कुल और अन्य क्षत्रिय कुल शामिल हुये।

प्रमार राजा महलकदेव की मृत्यु के बाद धार नगर पर मुस्लिमों का आधिपत्य हो गया जिसके कारण पोवारों का मालवा पर प्रभाव कम हो गया

था लेकिन उन्होंने बाद में दूसरे क्षेत्रों में जाकर राज्य भी किया और साथ में अन्य राजाओं को युद्ध क्षेत्र में सहयोग करने के प्रमाण मिलते हैं। वें सैनिक अभियानों में दूर-दूर जाते थे पर मालवा में ही मूल रूप से बसे रहे। यही कारण है की लम्बे समय तक साथ रहने के कारण छत्तीस कुल पोवारों की आज अपनी एक भाषा और विशिष्ट संस्कृति भी अस्तित्व में है जो किसी अन्य समुदायों से भिन्न हैं। इन्होंने राजपुताना और बुंदेलखंड के नातेदार राजपूत राजाओं सहित मराठाओं के सैन्य अभियान में भी सहयोग किया था लेकिन वें अभियान के बाद अपने मूल क्षेत्र में लौट आते थे। बाद में विदर्भ के स्थानीय राजाओं को सैन्य और राजकीय सहयोग के लिये आने के बाद वें सर्वप्रथम रामटेक के पास नगरधन में और फिर धीरे-धीरे वैनगंगा की पावन भूमि में जाकर स्थाई रूप से बसते चले गये।

ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार मध्यभारत में आकर पोवारों ने नगरधन में सन १७०० के आसपास क्षत्रिय पोवार संघ बनाया था जो वास्तव में मालवा के प्रमार राजाओं के वंशजों और उनके नातेदार क्षत्रियों या राजपूतों का एक सैन्य समूह था। ये वही छत्तीस कुल क्षत्रियों के वंशज थे जिनका उल्लेख पृथ्वीराज रासो में उल्लेख हुआ हैं। हालांकि समय के साथ कुलों के नामों में कुछ बदलाव भी हुये लेकिन इन्होंने खुद के छत्तीस कुल के संघ होने की अपनी पहचान को आज तक बचाये रखा है जो कि बहुत महत्वपूर्ण है। पोवारों ने वैनगंगा क्षेत्र में बसने के पूर्व ही विदर्भ की प्राचीन राजधानी नगरधन में अपनी पुरातन परम्पराओं और नये क्षेत्र के अनुरूप सामाजिक-सांस्कृतिक ताने-बाने का सृजन किया। स्व.लखाराम तुरकर जी द्वारा सन १८९० में लिखी किताब, "पँवार धर्मोपदेश" में पोवार समाज के इतिहास और संस्कृति पर बहुत कुछ लिखा गया हैं। इस पुस्तक में उन्होंने तात्कालिक पंवार समाज से आव्हान किया की समाज के छत्तीस कुल में शामिल हर एक कुल एक पवित्र धाम की तरह हैं और हमें अपनी छत्तीस कुल की पहचान को हर हाल में बचाये रखना हैं। उन्होंने समाज के सभी छत्तीस कुलों के नाम दिए हैं, हालांकि वैनगंगा क्षेत्र में वर्तमान में इकतीस कुलों की ही स्थाई बसाहट मिलती है। सभवतया: वें युद्ध के बाद नगरधन से वैनगंगा क्षेत्र में न आकर अपने मूल क्षेत्र

में वापस चले गए हों। 1876 की जातीय गणना में केंद्रीय प्रान्त में पोवारों के तीस कुलों के स्थाई बसाहट/निवास का उल्लेख मिलता हैं जबकि 1916 की रसेल की पुस्तक में नागपुर पंवारों के विषय में लिखा हैं की इनके छत्तीस कुल हैं और ये आपस में ही विवाह करते हैं। इसके अतिरिक्त इसमें यह भी तथ्य उल्लेखित है की पंवार समाज की कोई भी शाखा नही हैं। इसका अर्थ हैं की मालवा के छत्तीस कुल पंवारों यानि इन पुरातन क्षत्रियों ने अपने समुदाय की पहचान और परम्पराओं को सदैव ही बनाये रखा हैं।

इसीलिए पोवार या पंवार समाज सदैव ही अपने आप में एक सम्पूर्ण समाज हैं और अपने छत्तीस कुलों के साथ सैकड़ों वर्षों से एक अलग ही वैभवशाली समुदाय के रूप में अपनी पहचान को साबुत रखा है। इसे पंवारों की वैनगंगा शाखा नही कह सकते क्योंकि यही मूल पंवार समाज हैं जो वैनगंगा क्षेत्र में आकर बसा था। हालांकि मालवा-राजपुताना में इनके मूल कुल अब राजपूत संघ का हिस्सा हैं पर इस क्षेत्र में स्थाई रूप से बस जाने के कारण पोवार, सामाजिक-सांस्कृतिक रुप से उनसे काफी दूर हो चुके हैं और इस प्रकार एक अलग जातीय स्वरूप में जीवन व्यापन कर रहे हैं।

पंवार समाज में आधुनिक संगठनों के निर्माण का इतिहास सन १९०० के आसपास से मिलता है। स्व लखाराम जी तुरकर जी द्वारा लिखित "पँवार धर्मोपदेश" पुस्तक से स्वजातीय बन्धुओं को संगठित होकर कार्य करने की प्रेरणा मिली थी। छत्तीस कुल पोवार संघ के द्वारा समाज में बढ़ रही कुरूतियों को दूर कर ऐतिहासिक संस्कृति के रक्षण हेतु सन १९०० के आसपास "पंवार जाति सुधारणी सभा" का गठन किया गया था। इस संस्था के द्वारा समाज के ब्रह्मक्षत्रिय स्वरूप को पुनर्स्थापित करने के लिए समाज में बढ़ रहे मांसाहार और मदिरापान पर प्रतिबंध लगाने के लिए आर्थिक और सामाजिक दंड का विधान किया गया था। समाज के आदर्श, अवन्ति सम्राट विक्रम के द्वारा प्रभु श्रीराम को अपने पूर्वज और आदर्श माने जाने की परम्परा का निर्वहन करते हुए सर्वप्रथम मराठा राजाओं के सहयोग से रामटेक में भव्य राममंदिर का निर्माण किया गया। इसी प्रकार पंवारो के द्वारा नागपुर के भोसले शासको के सहयोग से बालाघाट जिले के रामपायली किले पर राममन्दिर का निर्माण

करवाया गया था। इसी क्रम में हमारे पुरखों के द्वारा बालाघाट जिले के बैहर नगर की सिहारपाठ पहाड़ी पर १९११ में राममंदिर का निर्माण कार्य पूर्ण हुआ।

पोवार समाज संघ की "पंवार जाति सुधारणी सभा" और "पंवार राम मंदिर समिती" ने मिलकर समाज की पहचान और संस्कृति को बचाने के लिये भविष्य में संगठित होकर सभी क्षेत्रों में काम करने का निर्णय लिया। १९१० से १९४१ तक पोवार संघ की अलग-अलग जगहों पर निरंतर बैठके होती रही। इसी बीच समाज में धीरे-धीरे छोटे-छोटे संगठन बनने लगें थे और समाज भी देश की स्वतंत्रता के लिये संघर्ष में तन-मन-धन से जुटे रहे। समाज में शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिये पोवार संघ के द्वारा सन १९२७ में "पंवार शिक्षा समिती" का गठन किया गया। इस समिती के द्वारा महिलाओं की आधुनिक शिक्षा में भागीदारी बढ़ाने के लिये विशेष प्रयास किये गये।

इस समय सभी पोवार बहुल क्षेत्र केंद्रीय प्रान्त में आते थे और नागपुर इसकी राजधानी थी। नागपुर में समाज के युवाओं को जोड़ने के लिये सन १९३१ में, "नूतन पंवार संघ" की स्थापना हुई। इस संघ द्वारा समाज के छात्रों को जोड़कर उन्हें समाजोत्थान के लिये जोड़ने का कार्य किया गया। इसी क्रम में २०२१ को "क्षत्रिय पोवार(पंवार) समाजोत्थान संघ" के नाम से पंजीयकृत कर "नूतन पंवार संघ" को फिर से जीवित किया गया। नूतन पंवार संघ ने एक सामाजिक पत्रिका भी निकालना शुरू किया था जो पोवार समाज की प्रथम सामाजिक पत्रिका थी। सन १९४१ में "मध्यप्रदेश एवं बेरार क्षत्रिय पंवार संघ" नाम से पोवार संघ को पुनर्गाठित किया गया ताकी सभी क्षेत्रों में समाज को सांस्कृतिक रूप से संगठित रखा जा सके। इस पोवार महासंघ ने पंवार जाति सुधारणी सभा के कार्य अपने हाथ में ले लिये और समाज की संस्कृति को संरक्षित कर 36 कुल पोवार समाज के समाजोत्थान हेतु पुनः अधिवेशन ले कर समाज को संघठित किया। सन १७०० से लेकर देश की स्वतंत्रता तक लगभग २५० वर्षों तक छत्तीस कुल पंवारों के संघ ने मालवा के राजपूतों की पहचान और अस्मिता के प्राचीन छत्तीस कुलीन स्वरूप को कायम रखा।

आजादी के तुरंत बाद क्षत्रिय पंवार संघ ने गोंदिया में पोवार बोर्डिंग (छात्रावास) का निर्माण किया।

स्वतंत्रता के बाद पोवारों का रोजगार के लिये देश-विदेश में जाना शुरू हुआ। समय के साथ देश के अनेक शहरों में जाकर समाजजन बसने लगें। समाज में जनजागृती के साथ ही कई नये-नये सामाजिक संगठन बनने लगें। गोंदिया, नागपुर, भिलाई, रायपुर, जबलपुर, बालाघाट, सिवनी, भोपाल, इंदौर सहित तहसील और स्थानीय स्तर पर अनेक संगठन और समितियों का निर्माण शुरू हुआ और पोवार समाज के आज लगभग १२५ के आसपास संगठन और समितियां बन चुकी हैं जो विभिन्न स्तर पर समाज के हित में कार्य कर रहे हैं।

छत्तीस कुल पोवारों की सबसे बड़ी संस्था "मध्यप्रदेश एवं बेरार क्षत्रिय पंवार संघ" आज "अखिल भारतीय क्षत्रिय पंवार(पोवार) महासंघ" के रूप में कार्य कर रही है। १९६१ में अखिल भारतीय क्षत्रिय पंवार महासभा भी अस्तित्व में आई थी लेकिन इस संस्था द्वारा पोवारों के साथ कई जातियों और जनजातियों को जोड़कर मिश्रित समाज निर्माण की नीति के कारण छत्तीस कुल पोवारों के स्वतंत्र अस्तित्व और पहचान पर संकट उत्पन्न हो गया था। हालांकि सन २००६ में अखिल भारतीय क्षत्रिय पंवार महासभा के समाप्त होते ही उसके पोवारों के साथ अन्य जातियों के विलीनिकरण और पुरातन नामों को बदलने के प्रस्ताव अस्तित्व में नही रहे थे। पोवार महासंघ के तुमसर अधिवेशन में प्रस्ताव पास कर पोवारों के स्वतंत्र अस्तित्व और पहचान को हर हाल में बचाये रखने का संकल्प लिया गया जिससे पोवारों के साथ अन्य जातियों के आपस में विलीनीकरण के सभी प्रयास ख़ारिज हो गये।

अठाहरवीं सदी की शुरुवात में सन १७०० के आसपास नगरधन(वैनगंगा जिला) में बना छत्तीस कुल क्षत्रिय पोवार संघ आज भी अपने समाज के उत्थान और गौरवशाली इतिहास तथा संस्कृति को कायम रखते हुये "अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार(पंवार) महासंघ" के रूप में निरंतर कार्य कर रहा है। यह संगठन अपनी प्राचीन सनातनी पोवारी संस्कृति को कायम रखते हुये सभी जातियों के साथ एकीकृत होकर अपने सनातन धर्म और

संस्कृति के रक्षण के साथ भारतवर्ष की एकता और अखंडता को कायम रखे हुये है। छत्तिस कुल समाज राष्ट्र उत्थान में निरंतर सहयोग करने की अपनी नीति पर कार्य कर रहा है। सैकड़ो वर्षों से पोवारों के छत्तीस कुलीन अस्तित्व और सांस्कृतिक स्वरूप को यथावत रखने और साथ में भाषा संस्कृति को संरक्षित कर समाजोत्थान करने के पुरातन संकल्प के अनुरुप ही सामाजिक संगठनों को कार्य करने चाहिए। छत्तीस कुल पोवार(पंवार) समाज सदियों से मूल समाज रहा है और मध्यभारत में आने के बाद भी उन्होंने अपने प्राचीन स्वरूप और अस्तित्व को ही बचाये रखा है और उसे ही हर हाल में बचाकर रखना अपने पूर्वजों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

द्वारा : अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार(पंवार) महासंघ
लेखक : ऋषि बिसेन,
B.E. (Met. Eng.), M.A.(History)

संदर्भ ग्रंथ (Bibliography)

१. "पँवार धर्मोपदेश" -श्री लखाराम जी तुरकर, १८९०
२. भोजपत्र-(१९८६)
३. पंवार गाथा- श्री जयपाल सिंह जी पटले(२००६)
४. पोवार - श्री महेन पटले(२०२२)
५. पोवारों का इतिहास (History of Poawar Community) 1658-2022 A.D. - प्राचार्य ओ.सी. पटले (२०२3)
६. Report on the Territories of the Raja of Nagpur 1816 suppliment 1827- Jenkins Recherd.
७. Hindu Tribes and Castes - Matthu Atmore Sherring, 1872.
८. The Tribes and Castes of the Central Provinces of India, 1916 – R. V. Russel and Hiralal.
९. Ethnological Report Nagpur-1868